# भारत – बहमास संबंध

## सिंहावलोकन

बहमास राष्ट्रमंडल एच सी आई, किंगस्टन के समवर्ती प्रत्यायन के तहत अगस्त, 2004 में आया। विभिन्न महत्वपूर्ण समकालीन मुद्दों पर विचारों में समानता, सरोकारों, आकांक्षाओं में समानता तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उत्कृष्ट सहयोग ने भारत – बहमास द्विपक्षीय संबंधों को ज्यादातर आकार दिया है तथा इनका प्रभुत्व है।

## राजनीतिक

भारत और बहमास दोनों ही गुट निरपेक्ष आंदोलन, जी-77, डब्ल्यू आई पी ओ, डब्ल्यू टी ओ (प्रेक्षक), संयुक्त राष्ट्र एवं इसकी विभिन्न सहायक संस्थाओं के सदस्य हैं। लोकतांत्रिक अभिशासन, कानून के शासन तथा अपने लोगों के अधिकारों के प्रति सम्मान के साथ दोनों देशों की आकांक्षाएं तेजी से आर्थिक विकास, गरीबी उन्मूलन, अपने लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार तथा क्षमता को बढ़ावा देने की दृष्टि से समान हों। विद्यमान असमानताओं को दूर करने तथा खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन तथा अन्यों के अलावा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित प्रमुख समकालीन मुद्दों के समाधान के लिए विभिन्न बहुपक्षीय संस्थाओं के उभरते वास्तुशिल्प को आकार देने में दोनों देश समान रूप से रूचि रखते हैं। बहमास ने एकपक्षीय रूप से या पारस्परिक रूप से संयुक्त राष्ट्र तथा विभिन्न अन्य अंतर्राष्ट्रीय निकायों में भारत की उम्मीदवारी का निरंतर समर्थन किया है। बहमास अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर भारत के सरोकारों के प्रति संवेदनशील है तथा भारत द्वारा प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादपर व्यापक अभिसमय का समर्थन करता है। बहमास ने वर्ष 2011-12 के लिए, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अस्थायी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया था तथा सुरक्षा परिषद का विस्तार होने की स्थिति में इसकी स्थायी सदस्यता के लिए हमारी आकांक्षाओं का भी समर्थन करता है। विभिन्न व्यापार विकास एवं अन्य वैश्विक मुद्दों पर बहमास की स्थिति ज्यादातर हमारी स्थिति जैसी है। बहमास न केवल संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित वैश्विक स्तर पर आनुपातिक भूमिका निभाने संबंधी हमारी आकांक्षाओं का समर्थन करता है और इसके प्रति संवेदनशील है, अपितु यह भी उम्मीद करता है कि बहमास में और कैरेबियन में भारत अधिक बड़ी भूमिका निभाए। राष्ट्रमंडल का सदस्य होने की वजह से इसके तत्वावधान में विभिन्न बैठकों जैसे चोगम, सी पी ए आदि की बैठकों ने अतिरिक्त समय के दौरान द्विपक्षीय बैठकों का अवसर प्रदान किया है।

अक्टूबर, 1985 में, स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने बहमास में आयोजित चोगम के लिए नसाऊ का दौरा किया था। यात्राओं के आदान – प्रदान के तहत सचिव (पश्चिम) द्वारा विदेश कार्यालय परामर्श के लिए सितंबर, 2005 में बहमास की यात्रा; जनवरी, 2006 में एक कारोबारी

शिष्टमंडल के साथ बहमास के विदेश एवं सार्वजनिक सेवा मंत्री फ्रेडरिक मिचेल की भारत यात्रा; और राष्ट्रमंडल युवा मंत्री सम्मेलन में भाग लेने के लिए 23 से 26 मई, 2006 के दौरान राज्य मंत्री (पी एम ओ) श्री पृथ्वीराज च्वहाण की बहमास यात्रा शामिल है (फ्रेडरिक मिचेल मार्च, 2006 में प्रोग्रेसिव लिबरल पार्टी के तत्कालीन प्रधानमंत्री पेरी क्रिस्टी की पत्नी की भारत की निजी यात्रा के समय उनके साथ आए थे)। बहमास के पूर्व प्रधानमंत्री हुबर्ट ए इंग्राहम ने नवंबर, 2007 में कंपाला में पिछली चोगम बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में हमारे प्रधानमंत्री के साथ बैठक की थी तथा सौर ऊर्जा, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, विशेषज्ञ शिक्षक तथा आईटी के क्षेत्र में सहायता प्रदान करने की मांग की थी।

बहमास आई पी यू का सदस्य नहीं है तथा सी पी ए स्तर पर संसदीय आदान – प्रदान / बातचीत बहुत सीमित है; द्विपक्षीय संसदीय आदान – प्रदान का अकाल है।

भारत का बहमास में कोई रेजीडेंट मिशन नहीं है तथा किंगस्टन में रहने वाले भारतीय उच्चायुक्त को समवर्ती रूप से बहमास की भी जिम्मेदारी सौंपी जाती है। उच्चायुक्त श्री प्रताप सिंह ने वृहस्पतिवार, 13 जून, 2013 को गैर रेजीडेंट उच्चायुक्त के रूप में बहमास राष्ट्रमंडल के गर्वनर जनरल सर आर्थर फॉल्कस, जी सी एम जी को अपना प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किया।

बहमास ने अक्टूबर, 2006 में भारत में अपना एक मानद कांसुल (श्री आशिष सराफ) नियुक्त किया है।

हमने बहमास में एक आईटी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव किया है। इसके तौर-तरीके तैयार किए जा रहे हैं तथा एम ओ यू इस समय मंत्रालय के टी सी प्रभाग के पास प्रारूप चरण पर है। इस एम ओ यू में दो साल की अवधि के लिए हार्डवेयर, साफ्टवेयर, कोर्स वेयर तथा एक प्रशिक्षण संकाय के प्रावधान की परिकल्पना है, जो हर साल बहमास के लगभग 600 लोगों को प्रशिक्षण देगा।

हमने 11 फरवरी, 2011 को द्विपक्षीय कर सूचना विनिमय करार (टी आई ई ए) पर हस्ताक्षर किया है तथा अब यह लागू हो गया है। भारत के पूर्व उच्चायुक्त श्री मोहिंद्र एस ग्रोवर ने भारत की ओर से इस करार पर हस्ताक्षर किया तथा बहमास राष्ट्रमंडल की सरकार की ओर से तत्कालीन वित्त राज्य मंत्री श्री जिवारगो लेइंग ने करार पर हस्ताक्षर किया।

सितंबर, 2004 में इवान चक्रवात से हुई तबाही की पृष्ठभूमि में भारत ने राहत के रूप में 50,000 अमरीकी डालर मूल्य की दवाएं प्रदान की थी।

हाल तक, प्रस्तावित 15 आई टी ई स्लॉटों का उत्तरोत्तर प्रयोग होता रहा है। मार्च, 2011 में, विदेश संस्थान, नई दिल्ली में विदेशी राजनयिकों के लिए पेशेवर पाठ्यक्रम में बहरीन के एक विदेश सेवा अधिकारी ने भाग लिया।

उच्चायुक्त ने नसाऊ, न्यू प्रोविडेंट, बहमास में बहमास सरकार द्वारा 23 से 25 अक्टूबर, 2014 के दौरान आयोजित राजनयिक सप्ताह – बहमास में भाग लिया। इससे स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों तथा बहमास का कार्य देखने वाले अन्य राजनयिकों से मिलने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

आर्थिक अंतर्वस्तु स्पष्ट रूप से अपर्याप्त है, उच्चस्तरीय आदान – प्रदान संतोषप्रद से काफी कम है तथा संसदीय एवं सांस्कृतिक आदान – प्रदान में भारी कमी हमारे द्विपक्षीय संबंधों की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं।

व्यापार

जनवरी, 2006 में बहमास के विदेश मंत्री की भारत यात्रा के दौरान दो करारों पर हस्ताक्षर किए गए – दोनों देशों की सरकारों के बीच द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक बहुप्रयोजनीय करार और फिक्की तथा बहमास के वाणिज्य चेंबर के बीच संयुक्त व्यवसाय परिषद के गठन के लिए करार। भारत एवं बहमास के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उतार – चढ़ाव किसी खास वर्ष में किसी खास वस्तु के आयात और निर्यात पर निर्भर है। आईटी उत्पाद / सेवाएं, भेषज पदार्थ, विनिर्मित माल एवं आटो पार्ट्स ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जिनके निर्यात में भारत की रूचि है।

भारतीय समुदाय के छोटे आकार, बाजार के छोटे आकार तथा भारत के साथ सीधे संपर्क के अभाव ने बहमास में स्थानीय कारोबारी समुदाय को यूएस / यूके में अपने नेटवर्क के माध्यम से भारतीय मूल के उत्पादों का आयात करने के लिए आकर्षित किया है। क्योंकि यह यूके / यूएस के काफी करीब है तथा परिवहन की दृष्टि से व्यवस्थाएं मितव्ययी एवं दक्ष हैं। हाल के वैश्विक आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि ने बहमास की अर्थव्यवस्था के सिमटने, जिसकी वजह से अन्य बातों के साथ बहमास में आने वाले पर्यटकों की संख्या घट गई, का द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा पर भी असर हुआ। भारतीय स्टेट बैंक तथा बैंक ऑफ बड़ौदा ने आफशोर बैंकिंग के लिए राजधानी नसाऊ में अपनी – अपनी रेजीडेंट शाखा खोली है। दोनों ही भारी मात्रा में कारोबार कर रहे हैं तथा अपने – अपने मूल संगठनों के लिए लाभ के केंद्र के रूप में चल रहे हैं।

सांस्कृतिक संबंध एवं भारतीय समुदाय

भारत और बहमास के बीच संबंध परंपरागत रूप से मैत्रीपूर्ण एवं मधुर हैं जो लगभग 300 के छोटे भारतीय समुदाय द्वारा सुदृढ़ होता है, जिसमें अधिक पेशेवर हैं जो बहमास की मुख्यधारा में घुल-मिल गए हैं तथा अपनी पहचान बनाई हुई है।

किसी सांस्कृतिक विनिमय करार के अभाव में सांस्कृतिक अंत:क्रिया वस्तुत: सीमित है। न तो बहमास का कोई छात्र भारत में पढ़ाई कर रहा है और न ही भारत का कोई छात्र बहमास में पढ़ाई कर रहा है।

**उपयोगी संसाधन :**

**भारतीय दूतावास, किंगस्टन की वेबसाइट**:
http://www.hcikingston.com/
**भारतीय दूतावास, किंगस्टन का फेसबुक पेज**:
https://www.facebook.com/HighCommissionOfIndiaKingston

***

**जनवरी, 2015**